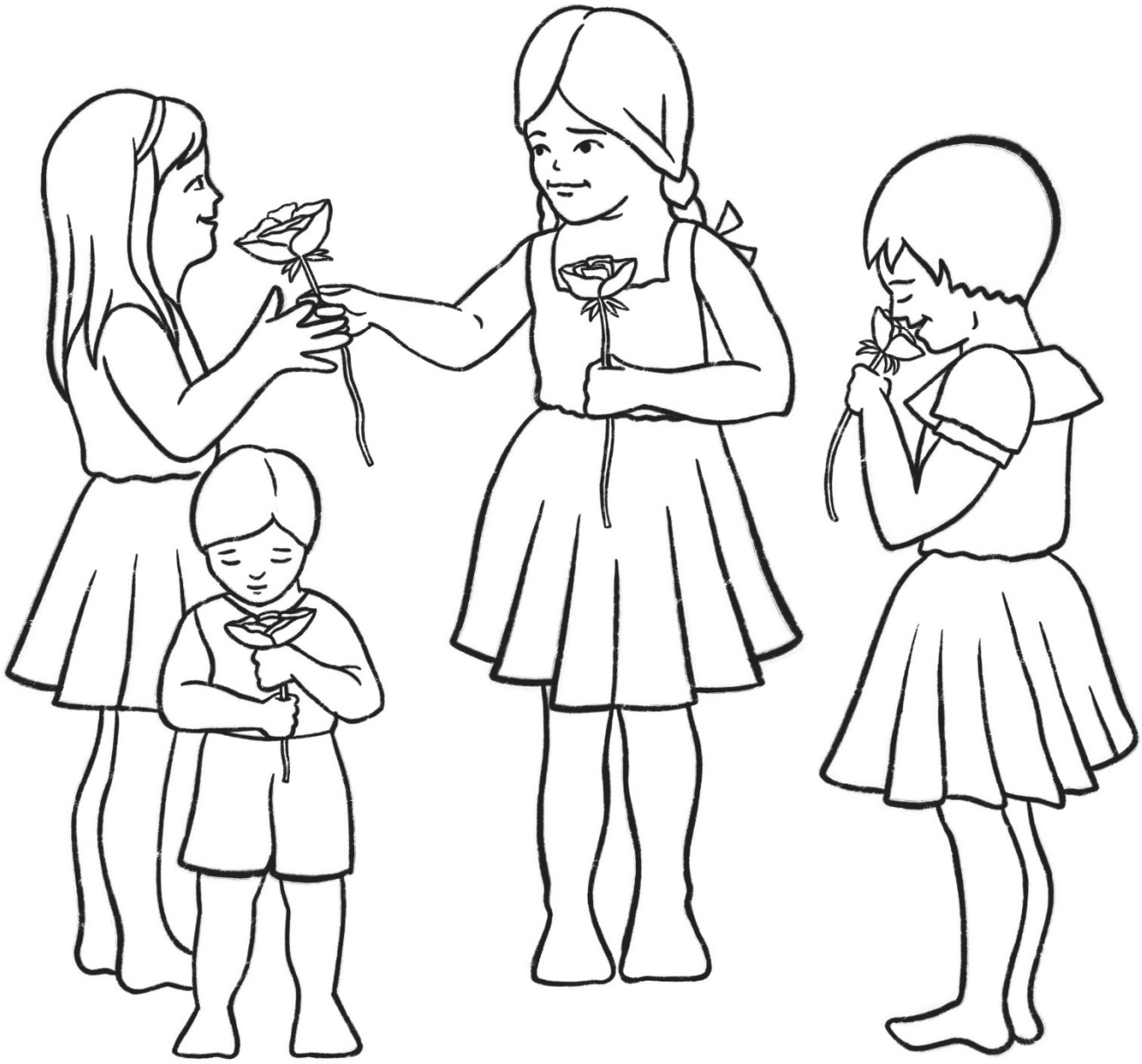

"हे चेतना के पुत्र ! मेरा प्रथम परामर्श यह है : एक शुद्ध, दयालु एवं प्रकाशमय हृदय धारण कर ...।"

"न्यायपथ का अनुसरण करो, क्योंकि यही सीधा मार्ग है।"

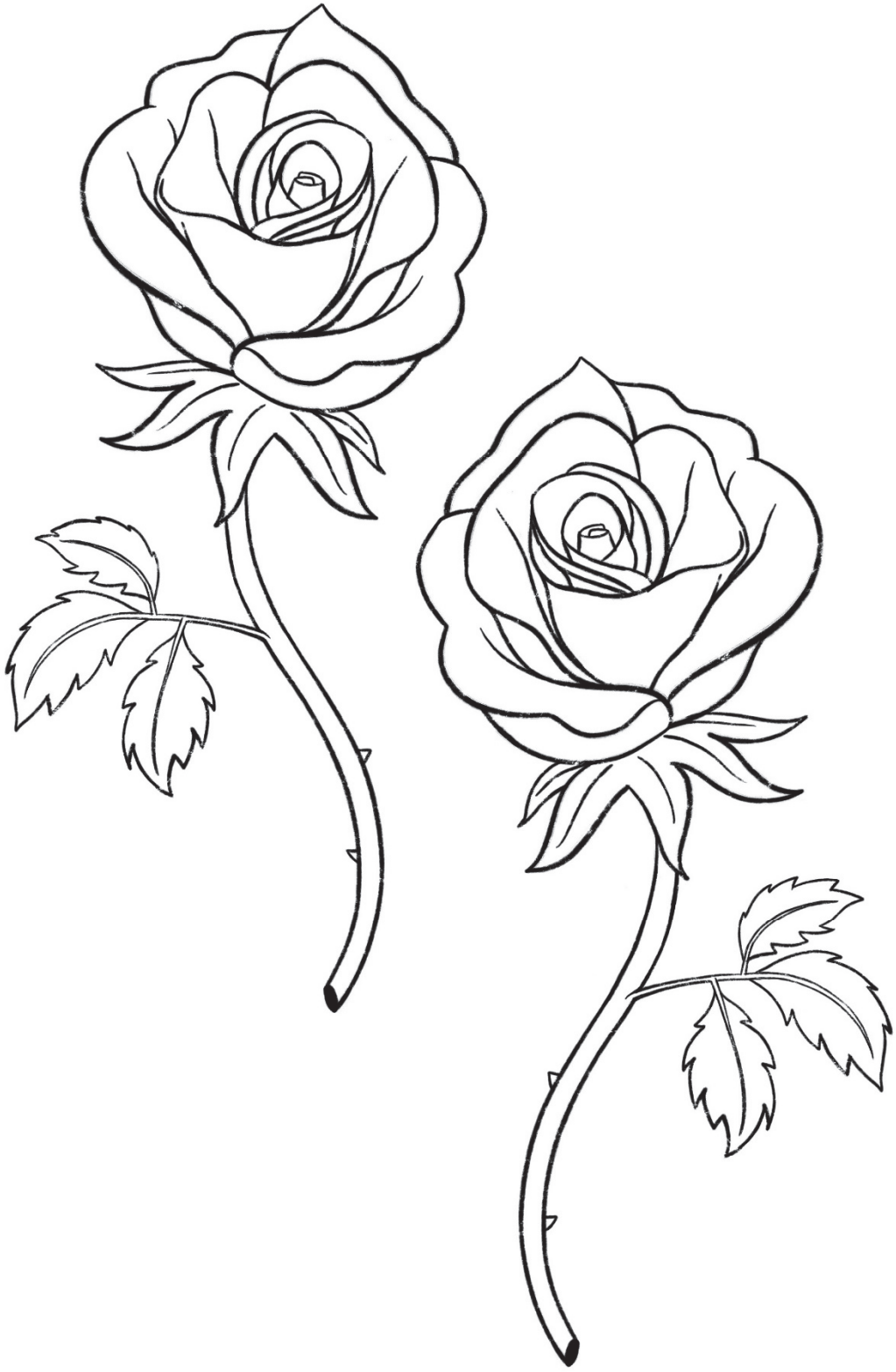

"हे मित्र ! अपनी हृदय–वाटिका में प्रेम के गुलाब के अतिरिक्त
कुछ भी न उपजा ...।"

"सत्यवादिता सभी मानवीय गुणों का आधार है।"

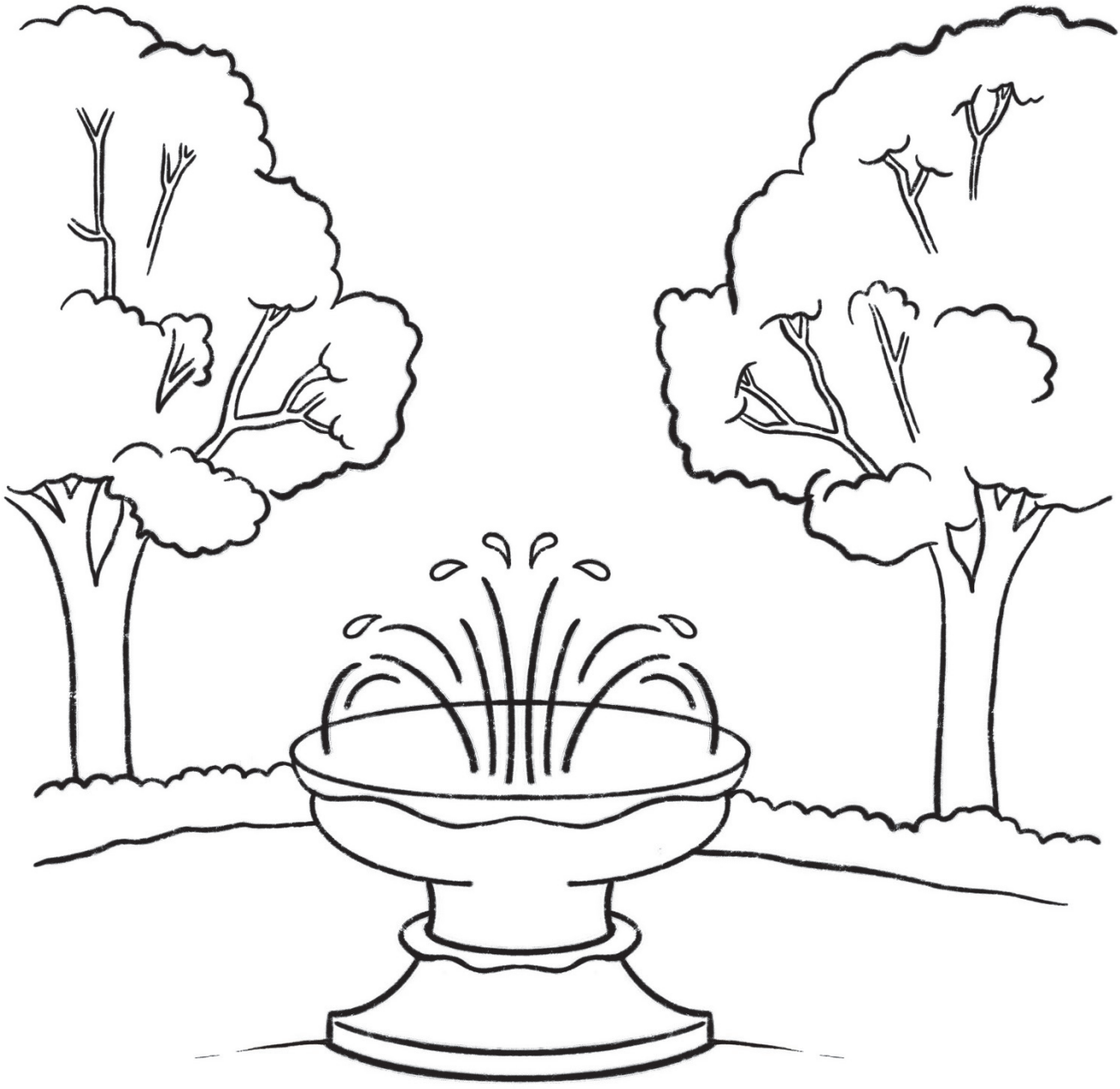

"देना तथा उदार रहना मेरे गुण है, कल्याण हो उसका जो स्वयं को मेरे गुणों से अलंकृत करता है।"

"धन्य है वह जो अपने भाई को अपने से अधिक महत्व देता है।"

"हे मनुष्य के पुत्र ! अपने हृदय के आनन्द में लीन रह, ताकि तू मुझसे मिलन के योग्य तथा मेरे सौंदर्य को प्रतिबिम्बित करे।"

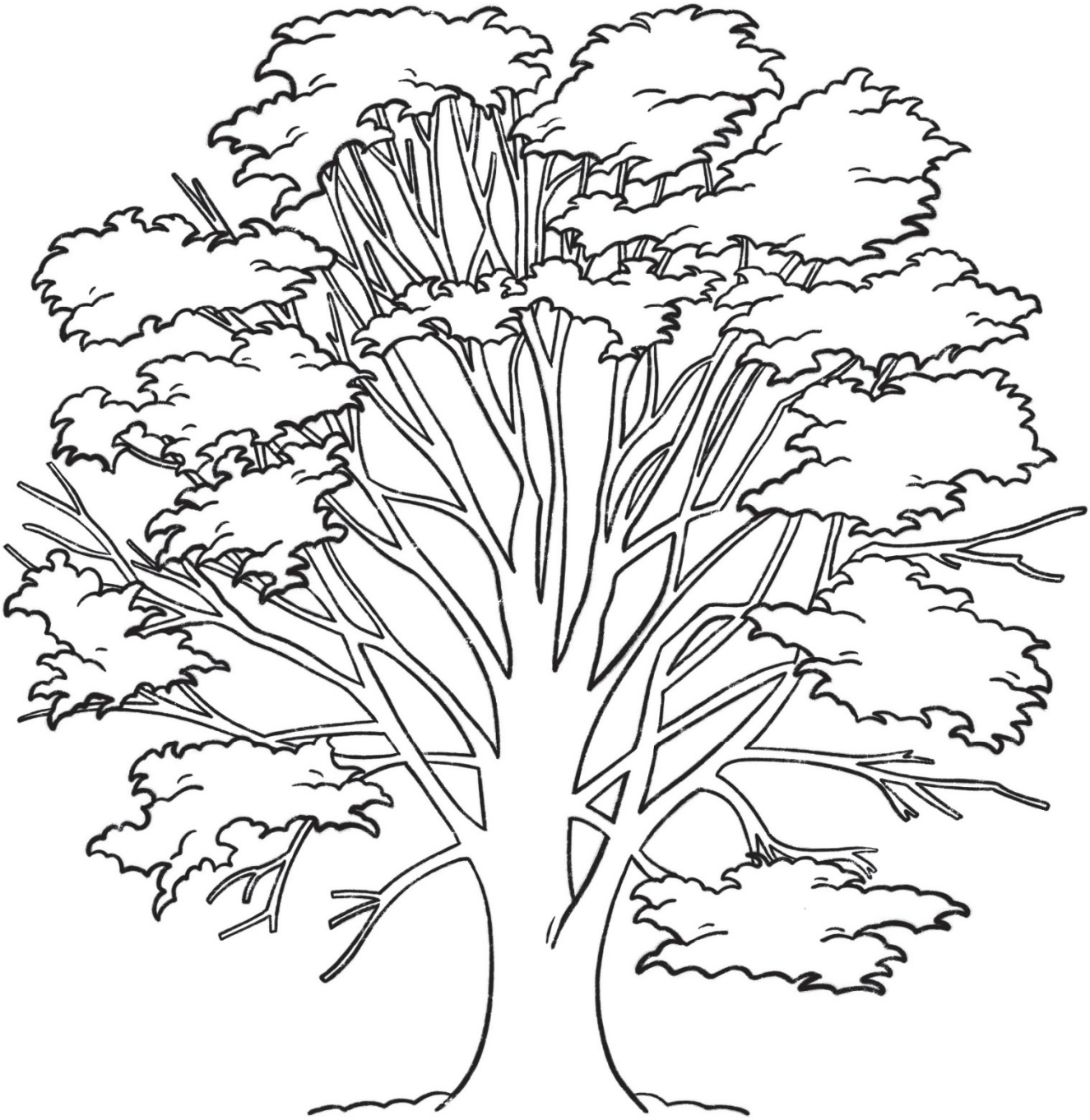

"हमें सभी समय में अपनी सत्यवादिता और निष्ठा को प्रकट करना चाहिये ...।"

"हे मनुष्य के पुत्र ! मेरे समक्ष स्वयं को विनीत कर ले, ताकि मैं कृपापूर्वक तुझ तक आगमन करूँ।"

"तुम प्रसन्न बनो। तुम कृतज्ञ बनो। ईश्वर को धन्यवाद अर्पित करने के लिये उठ खड़े हो, ताकि यह कृतज्ञता अनुकम्पाओं को बढ़ाने में सहायक बन सके।"

"... क्षमा और कृपा तुम्हारे आभूषण हों और जिससे ईश्वर के प्रिय पात्रों के हृदयों को आनन्दित कर सको।"

"हे लोगो, अपनी जिह्वा को सत्यवादिता के सौंदर्य से निखारो और अपनी आत्माओं को ईमानदारी के आभूषण से विभूषित करो।"

"ईश्वरीय साम्राज्य समानता और न्याय के साथ–साथ, कृपा, करूणा, और प्रत्येक सजीव आत्मा के प्रति दया से प्राप्त किया जा सकता है।"

"यह जान लो कि तुम्हारा सच्चा आभूषण ईश्वर से प्रेम करने में, और उसके अतिरिक्त अन्य सभी से अनासक्त रहने में है ...।"

“समस्त महिमा का स्रोत वह सब कुछ स्वीकार करना है जो उस स्वामी ने प्रदान किया है, और उसमें संतुष्ट रहना जो उस ईश्वर ने आदेशित किया है।“

"धन्य है वह जो सभी मनुष्यों से पूर्ण दयामयता और प्रेम की भावना से मिलता है।"

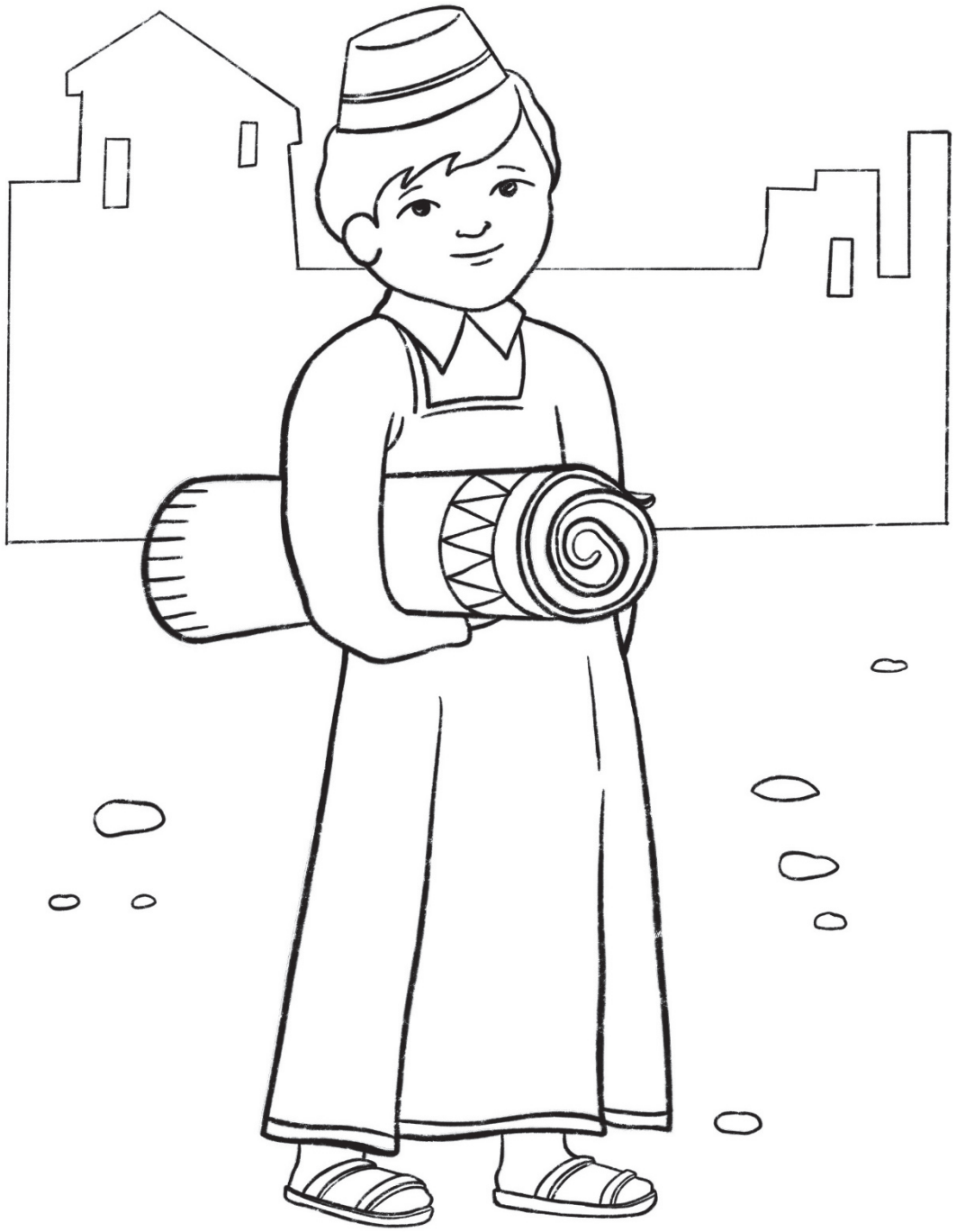

"साहस और शक्ति का स्रोत है ईश्वर के शब्द का प्रसार,
और उसके प्रेम में दृढ़ता।"

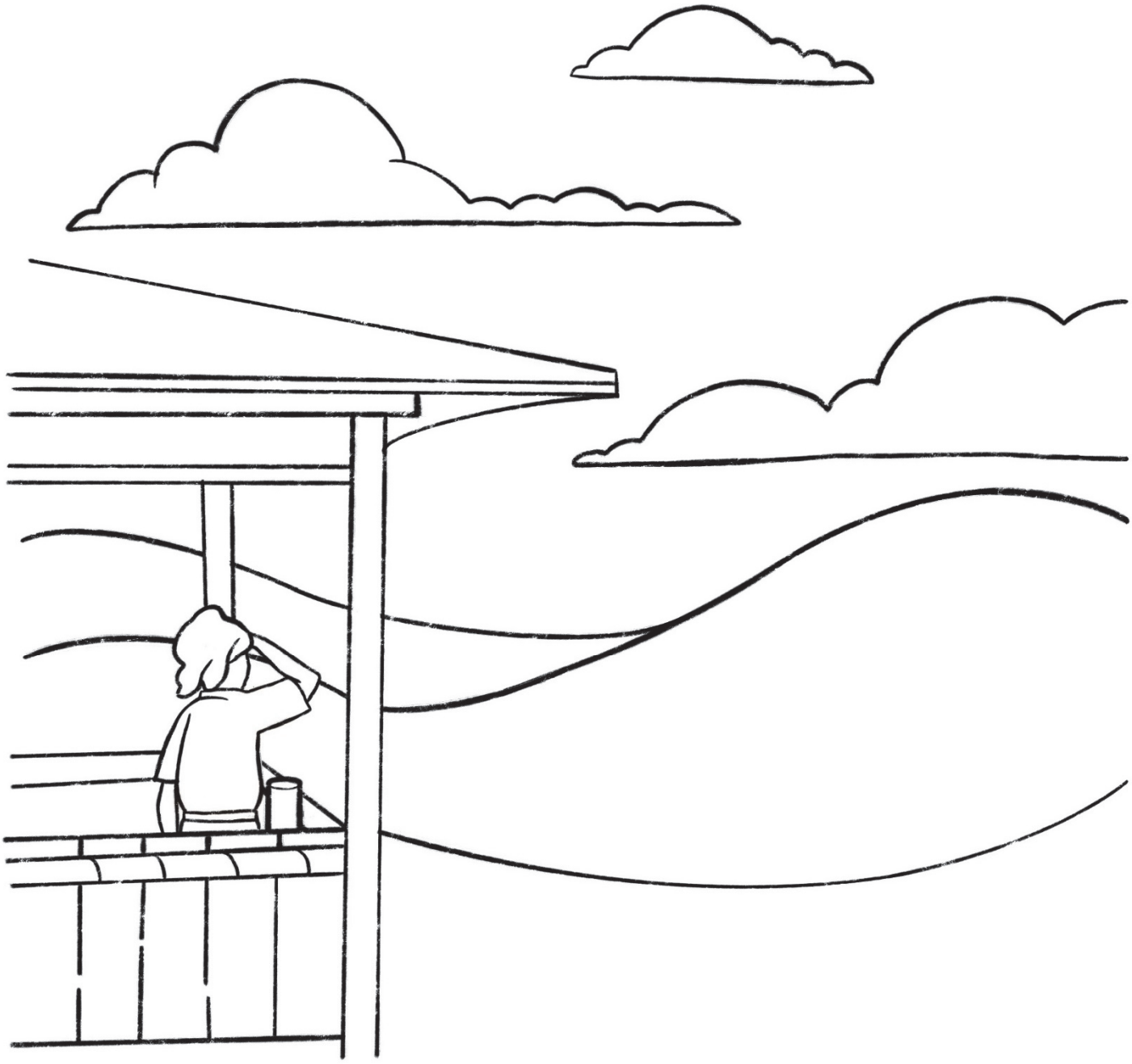

"ईश्वर में अपना भरोसा कभी न खो। सदैव आशावान बनो, क्योंकि मनुष्य पर ईश्वर की अनुकम्पाओं का प्रवाह कभी नहीं थमता।

"विश्वासपात्रता लोगों के शांति और सुरक्षा की ओर ले जाने वाला महानतम द्वार है।"

"हे लोगो, तुम ईश्वर के प्रेम की उष्मा के साथ प्रज्वलित बनो, ताकि तुम दूसरों के हृदय को भी प्रज्जवलित कर सको।"

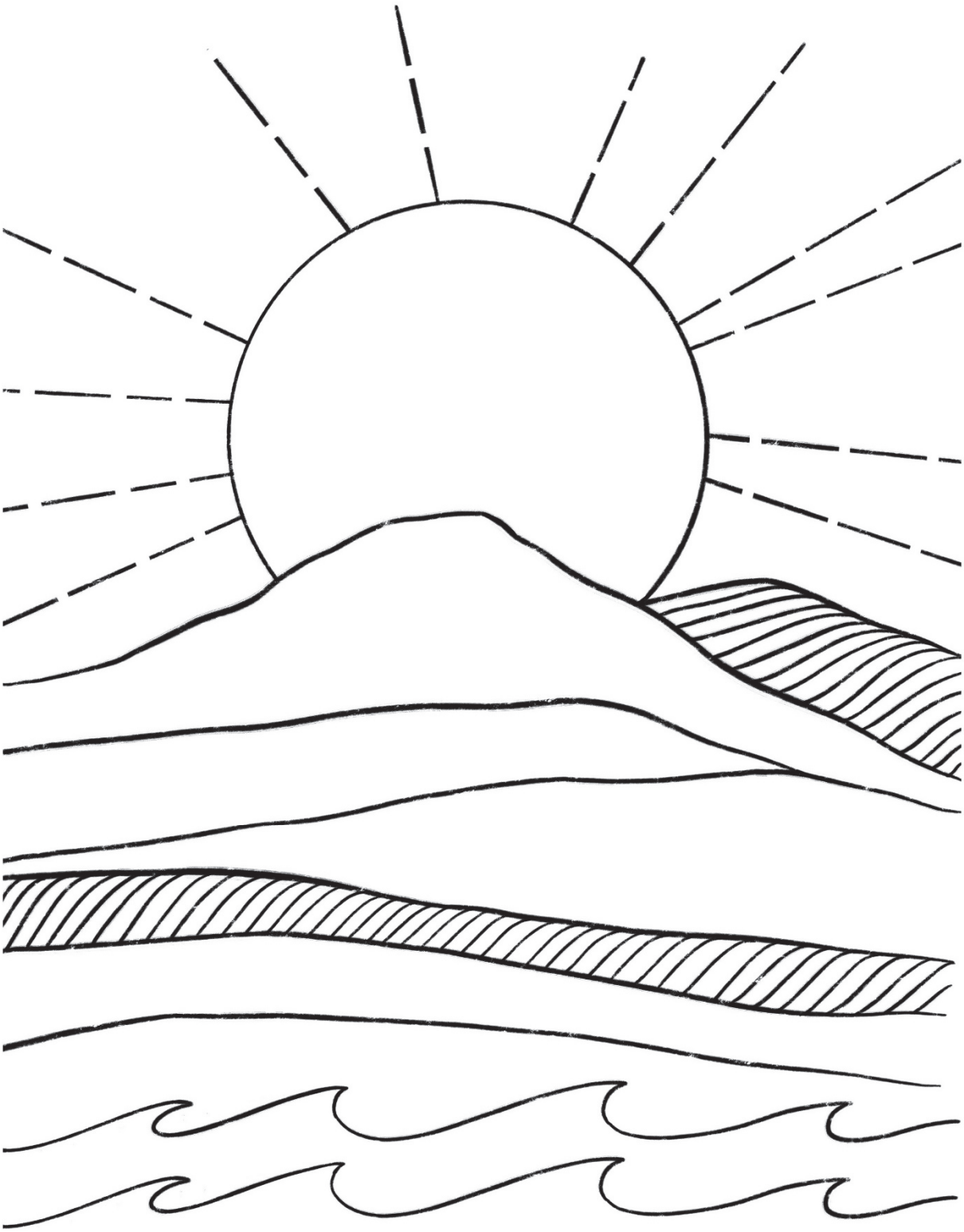

"हे अस्तित्व के पुत्र ! तुम मेरे दीपक हो और तुममें मेरा प्रकाश है। तुम उसमें से अपनी कांति प्राप्त करो और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य की खोज न करो।"

"आनन्दित है वह निष्ठावान जो उच्च प्रयासों के परिधान से शोभित है और इस धर्म की सेवा करने के लिये उठ खड़ा हुआ है।"

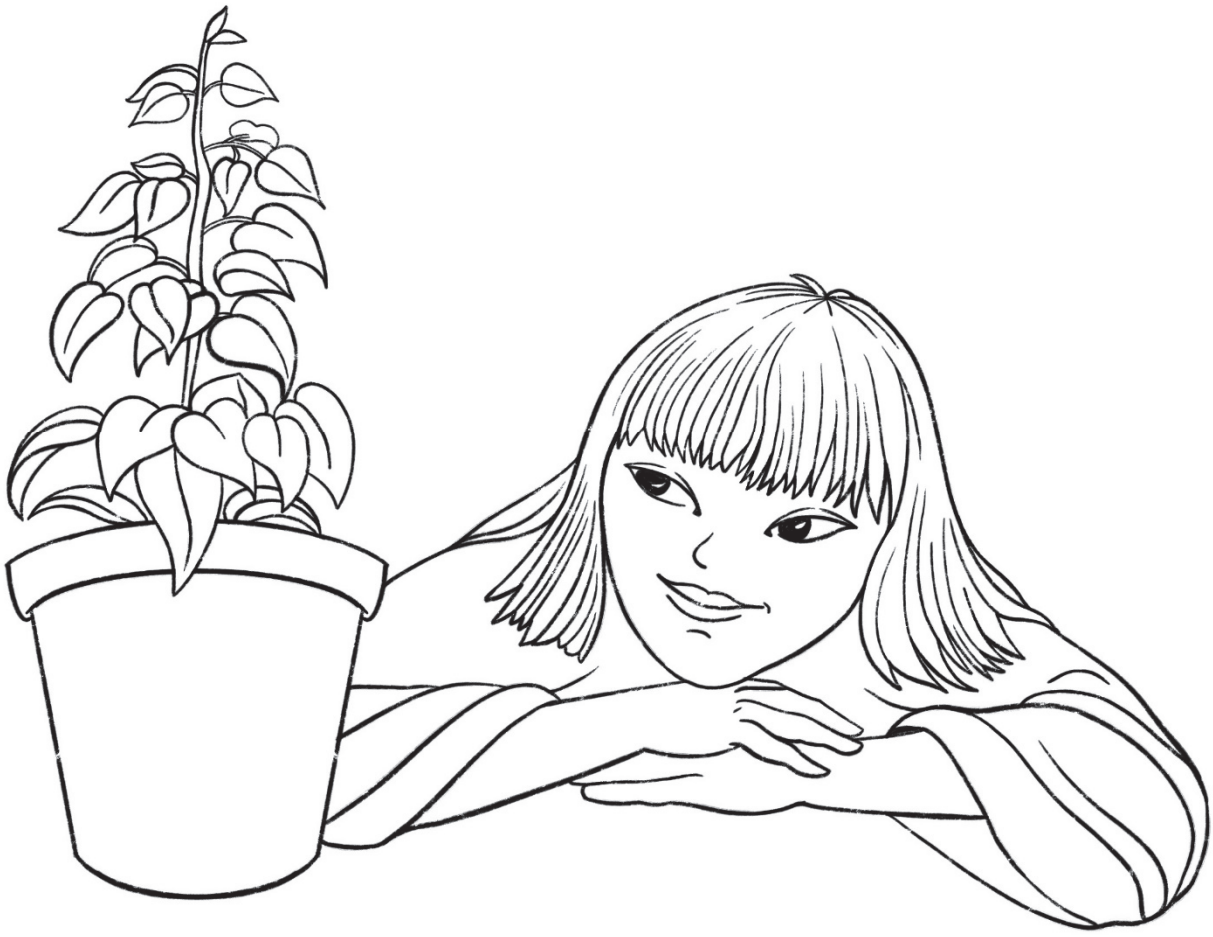

"वह सत्य ही, उनके पुरस्कारों को बढ़ा देगा, जो धैर्य के साथ सहन करते हैं।"

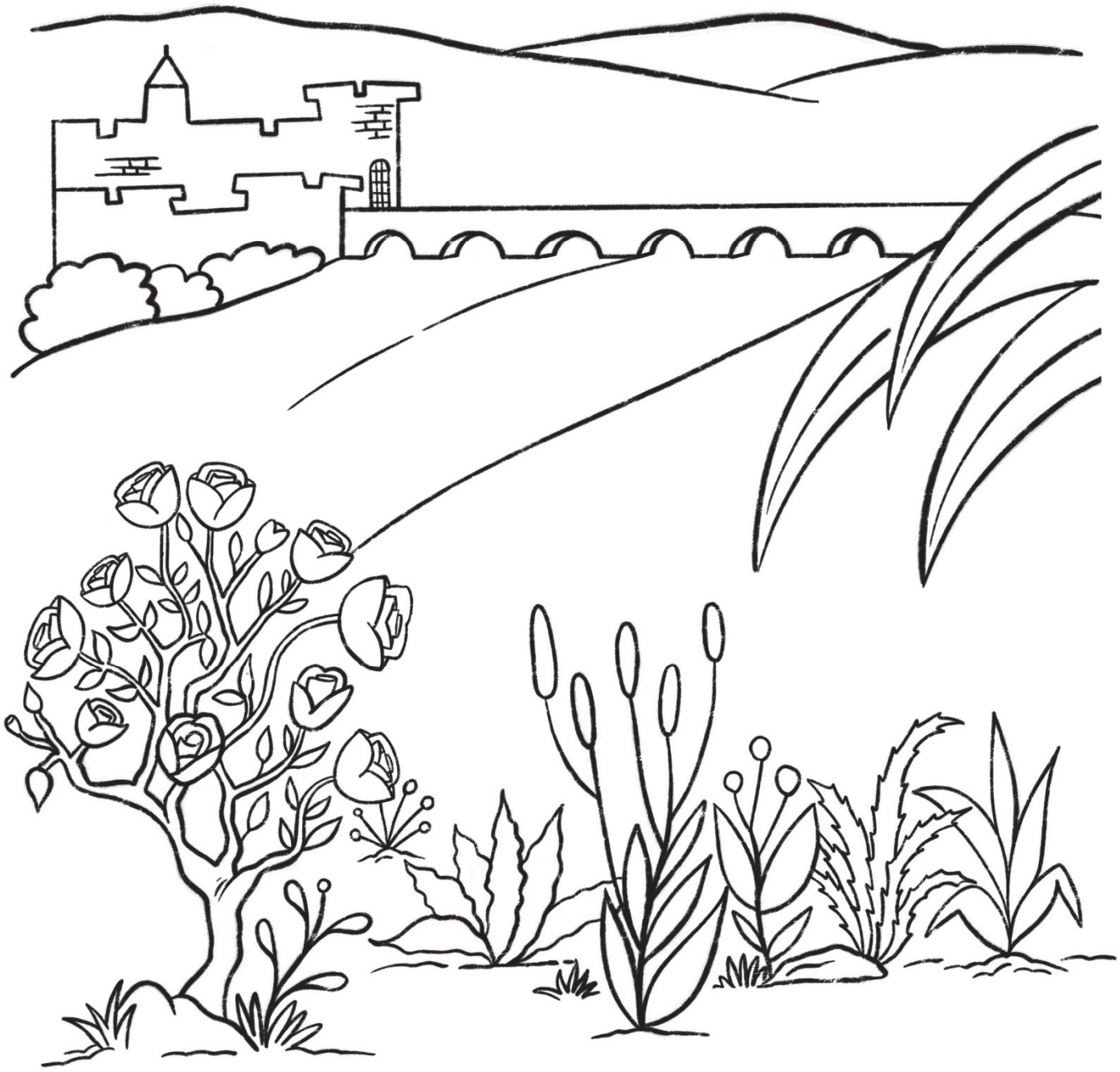

"तुम्हारा स्थान अत्यंत उच्च होगा यदि तुम अपने स्वामी के धर्म में अडिग बने रहोगे।"